317hi28

28

भारत और उसके पड़ोसीः चीन, पाकिस्तान और श्रीलंका

पिछले अध्याय में आपने पढ़ा कि भारत की विदेश नीति का मुख्य उद्देश्य अन्य सभी देशों, विशेषकर अपने पड़ोसी देशों के साथ अंतर्राष्ट्रीय शांति और सहयोग को बढ़ावा देना ही नहीं अपितु उनसे मैत्री संबंधों को विकसित करना भी है। पाकिस्तान, बाँग्लादेश, नेपाल, श्रीलंका, भूटान जो कि भारत के पड़ोसी हैं तथा जिनके साथ इसके मैत्री संबंध एक जैसी संस्कृति तथा विरासत पर आधारित हैं।

इस अध्याय में हम पाकिस्तान, चीन और श्रीलंका के साथ भारत के संबंधों का अध्ययन करेंगे।

उद्देश्य

इस पाठ को पढ़ने के बाद आप

- भारत-चीन के बीच संबंधों में तनाव के प्रमुख कारण जान सकेंगे;
- चीन के साथ सीमा विवाद के हल के संबंध में किये गये प्रयास जान सकेंगे;
- भारत और पाकिस्तान के बीच नाभिकीय शत्रुता जान सकेंगे;
- भारत और श्रीलंका के बीच ऐतिहासिक, संस्कृति और जातीय संबंध जान सकेंगे;
- कश्मीर की ऐतिहासिक समस्या के परिप्रेक्ष्य में भारत-पाक संबंधों का विश्लेषण कर सकेंगे; तथा
- तमिल अलगाववादी आंदोलन का विकास और भारत-श्रीलंका संबंधों पर इसका प्रभाव जान सकेंगे।

28.1 भारत और चीन

भारत और चीन एशिया के दो बड़े विशाल देश हैं। विशाल जनसंख्या वाले देश होने के साथ ही साथ ये दोनों विश्व की प्राचीनतम सभ्यताऐं भी हैं। इतिहासकारों ने दोनों देशों के बीच दूसरी शताब्दी ई.पू. से सांस्कृतिक संबंध होने के यथेष्ठ तथ्य दिए हैं।

1949 के साम्यवादी आंदोलन के परिणामस्वरूप इमाओत्से तुंग के नेतृत्व में चीन, पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चीन बन गया। विश्व के अश्वेत लोगों के नेतृत्व के लिए नेहरू ने भारत को चीन का प्रतिद्वंदी माना। दूसरी ओर, भारत ने चीन के निकट आने की भरसक कोशिश की है। भारत पहला गैर साम्यवादी देश है जिसने

1949 में साम्यवादी चीन को मान्यता प्रदान की। संयुक्त राष्ट्र में सदस्यता के लिए चीन के दावे को भारत ने पूर्ण समर्थन दिया। इसने फार्मोसा (ताईवान) पर भी चीन के दावे को स्वीकृति दी। भारत ने चीन के बिना जापान के साथ शांति संधि से इंकार कर दिया। कोरिया संकट में भी भारत ने चीन को हमलावर मानने से इनकार कर दिया जबकि चीन ने उत्तरी कोरिया की ओर से हस्तक्षेप किया था। वास्तव में भारत ने चीन को पश्चिमी देशों के समूह विशेषकर अमेरिका की नाराजगी जाहिर करने के बावजूद भी समर्थन दिया।

नेहरू की चीन नीति को 1950 में पहला आघात लगा जब चीन ने तिब्बत पर अधिकार स्थापित कर लिया। इस संबंध में यह स्मरण रखना महत्वपूर्ण है कि तिब्बत में लंबे समय से भारत की रूचि रही है क्योंकि यह दोनों देशों के बीच अवरोध के समान है। तिब्बत से भारत को कुछ विशेष लाभ भी मिले हैं। अत: तिब्बत पर चीन का सीधा नियंत्रण इन लाभों और भारत की सुरक्षा को खतरे में डाल सकता था।

तिब्बत समस्या पर भारत द्वारा शांति पूर्वक हल के सुझाव को चीनी साम्यवादी शासन द्वारा हस्तक्षेप माना गया। धीरे-धीरे तिब्बती लोग चीन की पराधीनता से अधीर हो उठे और 1959 में विद्रोह की भावना को रोक नहीं पाए। चीन ने क्रूरतापूर्वक इस आंदोलन का दमन करके तिब्बत को चीन का एक भाग घोषित कर दिया। तिब्बत के मुखिया दलाई लामा ने भागकर भारत में शरण ली और अपने देश की रही सही स्वायत्तता खो दी। दलाईलामा को भारत द्वारा दी गई शरण को चीन ने अविश्वास के रूप में देखा। 1950-53 की कोरियाई समस्या पर चीन ने भारत की निष्पक्ष तथा मध्यस्थता संबंधी भूमिका की सराहना की। 1954 की भारत-चीन मैत्री-संधि ने एक नया अध्याय प्रारम्भ कर दिया। इस संधि द्वारा तिब्बत पर चीन के आधिपत्य को भी स्वीकार कर लिया गया। इस संधि की प्रस्तावना में प्रसिद्ध 'पंचशील सिद्धांत' भी शामिल थे जिनके बारे में आप अध्याय 26 में अध्ययन कर चुके हैं। इस समझौते से शांतिपूर्ण संबंधों की शुरुआत हुई, जिसे हिन्दी-चीनी भाई भाई के नारे से चिन्हित किया गया। यहां पर यह बात ध्यान देने योग्य है कि बांडुंगा सम्मेलन (1955) में, नेहरू सक्रिय रूप से चीन को अफ्रीकी एशियाई एकता में ले आये।

28.1.1 भारत और चीन के बीच सीमा विवाद

1950 के दशक को भारत और चीन के बीच सीमा विवाद से चिन्हित किया जाता है जिसके फलस्वरूप दुर्भाग्यवश दोनों देशों के बीच 1962 में युद्ध हुआ। सबसे पहले चीन ने भारतीय क्षेत्र, नार्थईस्ट फ्रंटियर एजेंसी जो अब अरूणांचल प्रदेश है और लद्दाख पर अपने अधिकार का दावा प्रस्तुत किया और ऐसे मानचित्र प्रकाशित किए जिनमें इन्हें चीन के भाग प्रदर्शित किया गया था। चीन ने अपनी सीमा के विस्तार को निरंतर बनाये रखा तथा 1956-57 में 110 मील लंबी सड़क बनाई जो अक्साई चीनी क्षेत्र भारत के लद्दाख क्षेत्र से होकर जाती है। 1959 में, चीन ने भारतीय क्षेत्र के 51,000 वर्ग मील क्षेत्र पर अपना दावा प्रस्तुत किया और मैकमहोन रेखा की वैधता को भी नकारा।

मैकमेहोन रेखा यह भारत और चीन के बीच सीमा रेखा है जो भूटान के पूर्व में है। ब्रिटिश भारत, चीन तथा तिब्बत के प्रतिनिधियों के बीच 1914 में हुई एक गोष्ठी में इसका निर्धारण किया गया। ब्रिटिश केबैनिट में भारतीय सचिव आर्थर हैनरी मकमेहोन ने गोष्ठी में ब्रिटिश भारत का प्रतिनिधित्व किया था।

इस समय तक तिब्बत चीन का एक अंग बन चुका था जो अब भारत-चीन सीमा पर एक मजबूत स्थिति में था। वहां चारों ओर चीनी सैनिक थे। जब दोनों देशों के बीच मैकमेहोन रेखा पर विवाद चल रहा था, चीन ने नेफा (NEFA) और लद्दाख सैक्टर में अक्टूबर 1962 में भारत पर आक्रमण कर दिया। भारतीय क्षेत्र के बहुत बड़े भागों और चीन के भारत के उत्तर पूर्वी के भाग के 200 मील और लद्दाख में 15000 वर्ग मील क्षेत्र पर कब्जा जमाकर अकेले ही (एक पक्षीय) युद्ध विराम की घोषणा की। दोनों देशों के

बीच शांतिपूर्ण समझौता कराने का एक असफल प्रयास श्रीलंका द्वारा किया गया। कोलंबो के प्रस्ताव को चीन ने प्रस्ताव में रखी शर्तों के कारण ठुकरा दिया और यह प्रयास विफल हो गया। युद्ध के बाद अनेक वर्षों तक चीन-भारत के संबंधों में कोई सुधार नहीं दिखे। वास्तव में चीन ने भारत को अलग करके पाकिस्तान के साथ मित्रता बढ़ाने का रास्ता खोजा।

28.1.2 संबंधों का सामान्यीकरण

दोनों देशों के राजनीतिक संबंध 1976 में राजदूतों के परस्पर विनिमय पर सामान्य हुए। भारत-चीन संबंधों को 1988 में तत्कालीन प्रधानमंत्री राजीव गांधी की पांच दिवसीय चीन यात्रा के बाद प्रोत्साहन मिला। दोनों देशों ने वार्ता द्वारा सीमा विवाद को हल करने की पेशकश की। उसके बाद कई अन्य उच्च स्तरीय यात्राएं भी हुई, जैसे कि पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी ने 2003 में चीन यात्रा की। सीमा विवाद को अलग रखकर दोनों देशों ने अन्य क्षेत्रों में मैत्री संबंधों के विकास की स्वीकृति दी। जब तक कि सीमा विवाद का निपटारा हो, दोनों देशों ने वास्तविक नियंत्रण रेखा (एल ए सी) पर शांति और संयम कायम रखने की सहमति जतायी।

अब भारत के प्रति चीन के रूख में स्पष्ट अंतर आ गया है। इसका प्रमुख कारण यह था कि पूर्व के सोवियत संघ से चीन का संबंध बिगड़ना। इसके अतिरिक्त 1979 के बाद चीन के आर्थिक बदलाव में बड़े उत्पादन को एक बड़ी बाजार की आवश्यकता थी। चीन के राष्ट्रपति जियांग जेमिन की 1996 में भारत यात्रा इस मैत्री विकास को केन्द्र बिन्दु बनाने की गवाह बनी। चीनी राज्याध्यक्ष की यह सबसे पहली भारत यात्रा थी। नागा और मिजो विद्रोहियों को चीन द्वारा सहायता देना बंद कर देना; सिक्किम (जिसे चीन एक स्वतंत्र राष्ट्र मानता था) की स्थिति चीन के मौन रूख द्वारा एक अच्छे संकेत दिए। यही नहीं, कश्मीर के मामले को लेकर भी चीन ने निष्पक्ष रूप अपनाया जो मित्रता का सकारात्मक पहलू माना गया। भारत द्वारा 1998 में किये गये नाभिकीय विस्फोटों के बाद दोनों देशों के संबंधों में अचानक ही एक अल्प कालीन संकीर्णता आ गयी। इसके बाद चीन की तीखी प्रक्रिया यह आयी। संयुक्त राष्ट्र और अन्य इसी प्रकार की संस्थाओं में इस प्रकार के परीक्षणों की निंदा कराने के प्रस्ताव को अनुमोदन कराने में चीन ने महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। भारत के द्वारा किये गये इन परीक्षणों को इस क्षेत्र में चीन के बढ़ते प्रभाव एक आघात के रुप में देखा गया। परंतु 1999 में कश्मीर (कारगिल) में भारत पाक सैन्य क्षमता प्रदर्शन मामले में चीन के उदासीन रवैये ने चीन के भारत के प्रति नरम मैत्रीपूर्ण रवैये को स्पष्ट कर दिया। वास्तव में इस संघर्ष में चीन द्वारा हस्तक्षेप से मना करने से पाकिस्तान को भारत से युद्ध बंद करने के लिए बाध्य होना पड़ा। पूर्व प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेयी की 2003 में चीन यात्रा दोनों पड़ोसियों के बीच घनिष्ठ और हार्दिक संबंधों को बढ़ावा देने का एक नवीन प्रयास था। सिक्किम में नाथूला पास को सीमा समझौते के अनुसार सीमा माना गया है, और सिक्किम को चीन अब एक स्वतंत्र राष्ट्र नहीं मानता। दोनों देशों ने सीमा विवाद को राजनैतिक स्तर पर द्विपक्षीय संबंधों के द्वारा सुलझाने की आवश्यकता पर जोर दिया। यह इस बात की स्वीकृति है कि विवाद को राजनैतिक तरीके से हल किया जा सकता है। इसे वार्ता में देरी करने के बीजिंग के रूख को, इस मुद्दे को छोड़ देने के रूप में देखा गया। भारत के राष्ट्रीय सुरक्षा सलाहकार और चीन के उपमंत्री इन वार्ताओं के करने के लिए नियुक्त किए गए हैं। राजनयिक और राजनैतिक स्तर के कारण विकास पर आर्थिक दिशा में द्विपक्षीय संबंधों को मजबूत बनाने की पहल को और बल मिला। भारत और चीन के बीच सीमापार व्यापार ने 10 बिलियन डालर के आंकड़े को पार कर लिया है।

पाठगत प्रश्न 28.1

(क) चीन एक साम्यवादी देश सन् .... में बना। (1947, 1949, 1962)

(ख) अफ्रीकी–एशियाई देशों का बांडुंग सम्मेलन वर्ष .... में हुआ। (1945, 1949, 1955)

(ग) पूर्वी क्षेत्र में भारत और चीन के बीच .... सीमा रेखा की तरह है।
(हाँग हुआ बार्डर, मैकमोहन लाइन, इन्डो चाईनो बार्डर)

(घ) चीन ने .... में आर्थिक उदारता अपनाई। (1970 के प्रारम्भ में, 1970 के अंत में, 1990 के प्रारम्भ में)

(ङ) चीन के राष्ट्रपति .... ने 1996 में भारत यात्रा की।
(जाओएनलाई, जाओन्से तुंग, जियांग झेमिन)

28.2 भारत और पाकिस्तान

विश्व के किन्हीं भी दो देशों में इतनी समानता नहीं है जितनी कि भारत और पाकिस्तान में है। फिर भी लंबे समय से दोनों के बीच निरन्तर अघोषित युद्ध चल रहा है। पाकिस्तान के कारगिल आक्रमण (1999) के बाद दोनों देश नाभिकीय शक्ति क्षमता प्रदर्शन तक पहुंच गए हैं। इस संदेह और अविश्वास की भावना का जन्म 1947 में भारत विभाजन के बाद हो गया था। स्वाधीनता संग्राम के दौरान मुहम्मद अली जिन्ना के नेतृत्व में उन्होंने मुसलमानों के लिए एक अलग राज्य का प्रस्ताव रखा। जिन्ना ने इस बात पर आग्रह किया कि हिन्दू और मुस्लिम दो समुदाय हैं अत: दोनों के लिए दो अलग राष्ट्र बनना चाहिए। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस द्वारा विभाजन प्रस्ताव पर असहमति जताने से पाकिस्तान में संदेह की भावना और पुष्ट हो गई कि भारत विभाजन का अंत करने की कोशिश करेगा। दूसरी ओर पाकिस्तान को इस क्षेत्र में अक्षमता का भी पता था। पाकिस्तान ने एक और दृष्टिकोण विकसित किया कि बिना कश्मीर को पाकिस्तान में मिलाये पाकिस्तान एक पूर्ण राज्य नहीं हो सकता। यही नहीं, कश्मीर के भारत में विलय को भारत अपनी धर्मनिरपेक्ष और संघीय संरचना का आवश्यक तत्व मानता है।

28.2.1 कश्मीर विवाद

विभाजन के समय जम्मू और कश्मीर उन रजवाड़ों में से एक था जिन्हें 1947 में अनिश्चितता की स्थिति में छोड़ दिया गया था। पाकिस्तान ने इच्छा जताई कि मुस्लिम बाहुल्य होने के कारण कश्मीर को एक मुस्लिम राष्ट्र पाकिस्तान में मिल जाना चाहिए। परंतु राष्ट्रीय कांग्रेस के प्रमुख नेताओं ने पाकिस्तान के इस विचार का विरोध किया। महाराजा हरिसिंह ने तब तक कोई निर्णय नहीं लिया जब तक कि पाकिस्तान ने 1947 में अपने सशस्त्र घुसपैठीए कश्मीर में उतारे। पाकिस्तान घुसपैठियों को निष्फल करने के लिए महाराजा ने भारत से सहायता मांगी और अधिकार यंत्र पर हस्ताक्षर किये कि कश्मीर भारतीय संघ का एक हिस्सा बन जाए। इस अवसर पर एक सच्चे लोकतांत्रिक नेता की तरह प्रधानमंत्री नेहरू ने यह विश्वास दिलाया कि पाकिस्तान द्वारा युद्ध की समाप्ति घोषणा के बाद राज्य की स्थिति कश्मीरवासियों की इच्छा के आधार पर तय होगी। पाकिस्तान के साथ भारत एक खुला टकराव नहीं चाहता था। अत: उसने इस मामले को संयुक्त राष्ट्र के हवाले कर दिया। भारतीय सेनाओं ने घूसपैठियों से श्रीनगर को बचाया तथा पाकिस्तानियों को कश्मीर घाटी से खदेड़ दिया। परंतु सम्पूर्ण कश्मीर पर भारत द्वारा पुन: कब्जा नहीं किया जा सका क्योंकि इसका अर्थ दोनों देशों के बीच एक आमने सामने का भीषण युद्ध होना था। भारत ने 1948 में संयुक्त राष्ट्र से सहायता मांगी। 1 जनवरी 1949 को युद्धविराम की घोषणा की गयी। इससे जम्मू कश्मीर का एक बड़ा भाग (राज्य के लगभग 2/5 भाग) पाकिस्तान के अधिकार में रह गया जिसे हम पाकिस्तान अधिकृत कश्मीर (पी ओ के) के नाम से जानते हैं। 1950 में संयुक्त राष्ट्र के मध्यस्थों ने इस विवाद को सुलझाने की कई योजनाए बनायी परंतु दोनों देशों के बीच अंतर पाटने में विफल रहे।

कश्मीर की समस्या अब भी विचाराधीन है। संयुक्त राष्ट्र के 1948 में निर्णय के अनुसार पाकिस्तान द्वारा अधिग्रहित क्षेत्र से उसकी सेनाओं को हटाने के बाद वहां पर जनमत से निर्णय लिया जाना था जिसे

पाकिस्तान ने मानने से इंकार कर दिया। अतः भारत ने अपील की कि 1954 में सीधे चुनाव द्वारा इस क्षेत्र में लोगों की इच्छाओं को जानने का प्रयास किया जाए, इसने जम्मु कश्मीर का भारत में विलय संतोषजनक ढंग से कर दिया। मध्यस्थता के सुझाव का अंत हो गया। पाकिस्तान कश्मीर अधिगृहण के लिए अधीर था। यह सोचकर की 1962 में चीन युद्ध के बाद भारतीय सेना कमजोर हो गयी थी, पाकिस्तान ने 1965 में कश्मीर को वापस लेने के लिए युद्ध छेड़ा। परंतु भारतीय सेनाओं ने पाकिस्तान के प्रयास को विफल कर दिया।

नियंत्रण रेखाः 1949 में निर्धारित युद्ध विराम रेखा 1972 के बाद नियंत्रण रेखा के नाम से जानी गयी। कुछ लोग मानते हैं कि भारत पाक की कश्मीर समस्या का सम्भव हल इस नियंत्रण रेखा को अंतर्राष्ट्रीय सीमा में बदलना है।

इसके बाद पाकिस्तान को एक बार और मुंह की खानी पड़ी जब उसकी पूर्वी पाकिस्तानी शाखा जो एक हजार मील दूर इसकी पश्चिमी शाखा (विंग) ने 1971 में स्वतंत्रता संघर्ष आरम्भ किया। भारत ने बांग्ला देश को आजाद कराने में महत्वपूर्ण भूमिका निभायी। बांग्ला देश के जन्म ने सिद्ध कर दिया कि द्वि-राष्ट्रीय सिद्धांत के आधार पर कश्मीर पर पाकिस्तान के अधिकार के दावों का यह अंत था। पाकिस्तान का आकार अब घटकर भारत के आकार का एक चौथाई मात्र रह गया। इसने दक्षिण ऐशिया में शक्ति समीकरण को भारत के पक्ष में कर दिया।

संबंधों को सामान्य करने के लिए भारत ने पाकिस्तान को एक समझौते के लिए आमंत्रित किया जिसके फलस्वरूप 1972 में शिमला समझौता हुआ। शिमाल समझौते की एक महत्वपूर्ण विशेषता यह है कि दोनों देशों ने इस बात पर सहमति जतायी कि किसी तीसरे के हस्ताक्षेप के बिना वे कश्मीर सहित अपनी सभी समस्याओं का परस्पर हल ढूंढेंगे। इस प्रकार शिमला समझौते के अंतर्गत कश्मीर मामलो को किसी अंतर्राष्ट्रीय गोष्ठी में नहीं उठाया जा सकता। हालांकि पाकिस्तान ने इस समझौते के मूल तत्व को नकारने में हिचक नहीं दिखायी है। समझौते के अनुसार युद्ध बंदियों को लौटाने की बात कहीं गयी थी। यद्यपि भारत ने अधिगृहित पाकिस्तानी क्षेत्र को लौटा दिया तथा एक नयी युद्ध विराम रेखा (1948-49) में खीची गयी पुरानी युद्ध विराम रेखा के स्थान पर) खींची गयी, जिसे नियंत्रण रेखा के नाम से जाना जाता है। परंतु पाकिस्तान ने खुले युद्ध के बजाय पंजाब में आतंकवाद को बढ़ावा और सहायता देकर तथा जम्मु और कश्मीर में राज्य समर्थित आतंकवादी गतिविधियों द्वारा 1980 के मध्य से अब तक भारत को खंडित करने के रास्तें ढूंढे हैं। पाकिस्तान अब भी पाकिस्तान अधिग्रहित क्षेत्र में चलाये जा रहे आतंकवादी प्रशिक्षण शिविरों द्वारा कश्मीर में आतंकवादी और पृथक करने वाली प्रवृतियों को बढ़ावा देने में लगा हुआ है।

नियंत्रण रेखा की पवित्रता जो कि भारत और पाकिस्तान के बीच 1972 के शिमला समझौते के अंतर्गत निर्धारित की गयी थी, इसका मई 1999 में एक बड़ी योजना के अंतर्गत पाकिस्तान ने उल्लंघन किया। यह पाकिस्तानी सेनाओं द्वारा कारगिल ड्रास और बेतलिक क्षेत्रों में भारत में घुसपैठ द्वारा किया गया। भारतीय सेनाओं ने एक बार फिर लगभग 60 दिन तक चलने वाले इस युद्ध में पाकिस्तानियों को पराजित किया। कारगिल में पाकिस्तानी घुसपैठ का उद्देश्य नाभकीय युद्ध की चेतावनी का संकट उत्पन्न करना था जिसके द्वारा कश्मीर विवाद पर संयुक्त राष्ट्र के पक्ष को अपने पक्ष में कराने को निश्चित करना था। सौभाग्यवश संयुक्त राष्ट्र और न ही चीन ने पाकिस्तान की सहायता की। वास्तव में यह पाकिस्तान की राजनयिक और सैन्य पराजय है।

28.2.2 नाभिकीय परीक्षण और संबंध सुधार के प्रयासः

भारत और पाकिस्तान द्वारा मई 1998 में किए गए परमाणु परिक्षणों ने भारत पाकिस्तान संबंधों को एक बिलकुल नई दिशा दी। दोनों पड़ोसियों के संबंध बिल्कुल निम्नस्तर पर पहुंच गए। 1970 के मध्य के बाद पाकिस्तान को चीन द्वारा नाभिकीय अस्त्र निर्माण में गुप्त सहायता देने से भारत को एक नाभिकीय चेतावनी का सामना करना पड़ रहा है। कोई संदेह नहीं है कि पाकिस्तान की इस नाभिकीय नीति का लक्ष्य

भारत के विरुद्ध है।

मई 1998 में परमाणु परिक्षणों के फलस्वरूप भारत और पाकिस्तान के बीच उत्पन्न कटुता ने दोनों देशों को यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि यह सब अनिश्चित रूप से जारी नहीं रखा जा सकता। दोनों देशों को कोई तो हल ढूंढना होगा। अत: विदेश सचिव स्तर की वार्ता प्रारम्भ की गई और दिल्ली और लाहौर के बीच एक बस सेवा का प्रस्ताव रखा गया। प्रधानमंत्री बाजपेयी की 1998 की बस राजनीति ने दोनों देशों के बीच सदभावना को बढ़ाया। लाहौर घोषणा कर हस्ताक्षर के बाद सभी शेष मामलों (कश्मीर मामलों सहित) का भी शांतिपूर्ण तरीके से हल ढूंढने की आवश्यकता पर बल दिया। जबकि भारत ने परस्पर लाभ के अन्य क्षेत्रों में कश्मीर सहित वार्ता प्रक्रिया के संदर्भ में यह सुझाया कि दोनों में से कोई भी किसी एक भी मामले में उग्र व्यवहार नहीं अपनाएगा। बिना किसी शर्त वार्ता फिर से प्रारम्भ हो गई है। इन वार्ताओं द्वारा नियंत्रण रेखा के आर–पार लोगों में संपर्क बढ़ाने पर जोर दिया गया है, तथा भारत और पाकिस्तान के बीच आर्थिक संबंध सुधाराने पर भी जोर दिया गया है। भारत में सरकार के बदलने के बाद भी हम पाकिस्तान के साथ शांति और समृद्धता को बढ़ाते हुए सहअस्तित्व की वचनबद्धता से भटके नहीं हैं।

पाठगत प्रश्न 28.2

निम्नलिखित कथनों पर सत्य अथवा असत्य लिखिए

(क) द्विराष्ट्रीय सिद्धांत को भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस ने स्वीकार किया। सत्य/असत्य

(ख) जम्मु कश्मीर के महाराज हरिसिंह ने भारत और पाकिस्तान दोनों से सहायता मांगी परंतु केवल भारत ने उत्तर दिया। सत्य/असत्य

(ग) पाकिस्तान अधिग्रहीत कश्मीर को पाकिस्तान में आजाद कश्मीर के नाम से जाना जाता। सत्य/असत्य

(घ) पूर्वी पाकिस्तान के लोगों ने अप्रैल 1971 में स्वंय को स्वतंत्रत घोषित कर दिया। सत्य/असत्य

(ङ) शिमला समझौता 1972 में भारत और बांग्लादेश के बीच हस्ताक्षररिक्त हुआ। सत्य/असत्य

(च) मई 1972 में भारत द्वारा नाभिकीय परिक्षण के तुरंत बाद कारगिल युद्ध हुआ। सत्य/असत्य

28.3 भारत और श्रीलंका

श्रीलंका जिसे पहले (1972 तक) सीलोन के नाम से जाना जाता था, एक छोटा द्विपीय देश है जो कि भारत के दक्षिण में हिंद महासागर में स्थित है। इसका कुल क्षेत्रफल 25,332 वर्ग मील है। सभी देशों में भारत से इसकी भौगोलिक निकटता सबसे अधिक है। केवल 18 मील का विस्तृत पाकस्ट्रेट वाला उथला क्षेत्र जो कि उत्तरी श्रीलंका में जाफना है वह भारत के सुदुर दक्षिणी राज्य तमिलनाडु से श्रीलंका को अलग करता है। हिन्द महासागर में इसकी स्थिति (वाणिज्यिक और सुनियोजित समुद्री और वायु मार्गो के केन्द्र पर) और अमरिकी जलसेना आधार डीगो गार्सिया से इसकी निकटता प्रदर्शित करती है कि यह आकार, जनसंख्या और संसाधनों के आधार पर कितना महत्वपूर्ण है। भारत और श्रीलंका के बीच संस्कृति का इतिहास प्राचीन समय से है। श्रीलंका की संपूर्ण जनसंख्या को 64 प्रतिशत बुद्ध धर्म में और 15 प्रतिशत हिन्दू धर्म में विश्वास रखते हैं। 19वीं शताब्दी के आरम्भ में श्रीलंका एक ब्रिटिश उपनिवेश बन गया। 4 फरवरी 1948 को इसे स्वतंत्रता प्रदान की गयी।

भारत और श्रीलंका के बीच संबंध सामान्यत हार्दिक रहे हें, हालांकि कुछ अवसरों पर तमिल और सिन्हालियों के बीच जातीय संघर्ष के कारण ये संबंध तनावपूर्ण होते रहे है। जातीय समस्याओं के बावजूद

भी भारत ने अपनी इच्छा इसके ऊपर कभी नहीं थोपी है और अपनी विदेश नीति के आधार पर अपने इस दक्षिण पड़ोसी के साथ पारस्परिक समझ और मित्रता का व्यवहार किया है। दोनों पड़ोसियों के बीच समान रूचि का एक महत्वपूर्ण क्षेत्र दोनों ही की गुट निरपेक्ष विदेशी नीति का होना है। भारत चीन विवाद में श्रीलंका सामान्यत: उदासीन रहा है। वास्तव में 1962 के भारत और चीन के युद्ध के बाद इसने मध्यस्थता का प्रयास किया। भारत के नाभीकीय सम्पन्न होने पर भी श्रीलंका ने समझबूझ दिखाई। हाल ही में 2005 में सुनामी द्वारा श्रीलंका के तटवर्ती क्षेत्रों में हुए विनाश की सहायता के लिए भारत ने बहुत बड़ा योगदान दिया।

28.3.1 भारतीय तमिलों की समस्या

श्रीलंका का जाफना राज्य बाहुल्य तमिल जनसंख्या वाला क्षेत्र है। यह समस्या तब गंभीर हो गयी जब तमिल लोगों ने उत्तरी श्रीलंका में अलग राष्ट्र ईलम की मांग की। यहां पर यह समझना महत्वपूर्ण है कि श्रीलंका में तमिलों के दो वर्ग हैं: सीलोन तमिल जिनके पूर्वज सदियों पहले श्रीलंका के प्रवासी हो गए थे। उनकी अनुमानित संख्या लगभग दस लाख है। दूसरा वर्ग भारतीय तमिल हैं जिनके पूर्वज ब्रिटिशों द्वारा पौधारोपण मजदूरों के रूप में 19वीं शताब्दी में श्रीलंका लाये गये थे। उनकी जनसंख्या भी दस लाख के लगभग है जिनमें से बहुत से वहां पर बिना नागरिकता के है। उनकी स्थिति की समस्या ने भारत श्रीलंका संबंधों पर अपना प्रभाव दिखाया। सीलोन तमिलों के साथ संघर्षवाद में हुआ।

सिन्हालियों में तमिल प्रभुत्व का डर है जो कि जातिय संघर्ष का मुख्य कारण है। दोनों समुदायों के बीच इस भेद का ब्रिटिश शासकों ने सिन्हालियों की बढ़ती राष्ट्रीयता को कम करने में लिया। तमिलों को प्रशासनिक ढांचे में प्रवेश की अनुमति दे दी गयी और धीरे-धीरे उन्होंने व्यापार और व्यवसाय पर नियंत्रण कर लिया। आर्थिक संसाधनों की कमी और अवसरों तथा अपने ही लोगों के बढ़ते दबाव के कारण श्रीलंका सरकार भारत और सीलोन के तमिलों की महत्ता को कम करने के लिए कदम उठाने के लिए बाध्य हो गयी। लोक सेवाओं में जहाँ 1948 में 30 प्रतिशता तमिल प्रतिनिधि थे वह 1975 में गिरकर केवल पांच प्रतिशत रह गयी। सिन्हालियों को तमिल प्रभुत्व के क्षेत्रों में अधिक से अधिक संख्या में बसने को प्रोत्साहित किया गया। नागरिकता के कानून ने 1948 और 1949 में लगभग 10 लाख भारतीय तमिलों को राजनैतिक अधिकारों से वंचित कर दिया। तमिल युवक जिनका अहिंसा से विश्वास उठ चुका था, उन्होंने स्वंय को लिब्रेशन टाईगर्स के रूप में संगठित किया। इन टाईगर्स का लक्ष्य ईलम में सम्पूर्णा प्रभुत्व सम्पन्न तमिल राज्य का निर्माण है।

तमिलों के मामले और सरकार द्वारा अपनायी गई नीतियों ने भारत श्रीलंका संबंधों पर काली छाया वाली छाप छोड़ी। समय-समय पर भारत ने सीलोन सरकार के विरोध में भेदभावपूर्ण नीति अपनाने की शिकायत की। 1964 में एक समझौते द्वारा राज्यहीन व्यक्तियों (भारतीय तमिलों) की समस्या का हल ढूंढने की कोशिश की गई। लगभग तीन लाख लोगों को श्रीलंका की नागरिकता और छह लाख पच्चीस हजार लोगों को भारतीय नागरिकता प्रदान करनी थी। इन लोगों को किस्तों में भारत स्थानांतरण के लिए पंद्रह वर्षों का समय दिया गया। बाद में 1974 में बचे हुए एक लाख पचास हजार लोगों की नियति को निश्चित करना था। दोनों देशों के बीच यह सहमति हुई कि उनमें से आधे लोगों को श्रीलंका की नागरिकता और आधों को भारतीय नागरिकता दी जानी होगी। अत: राज्यहीन (नागरिकता विहीन)लोगों का यह मामला दोनों देशों ने शांतिपूर्ण तरीके से हल कर लिया।

भारत और श्रीलंका के बीच 1968 में केवल एक मील लंबे और 300 गज चौड़े एक छोटे से द्वीप कछाटिबू के स्वामित्व का विवाद उठा। 1974 में दोनों देशों के बीच हुए एक समझौते के तहत भारत ने इस द्वीप पर श्रीलंका के स्वामित्व को स्वीकार कर लिया।

28.3.2 तमिल पृथक्करण

तमिलों और सिन्हालियों के बीच जातीय विवाद का एक लंबा इतिहास है। 1983 में यह समस्या और गंभीर हो गई। इन समुदायों के बीच खाई के गहरा होने के बाद आतंकवादी और पृथक्कारी संगठन सक्रिय हो गए। तमिल युनाइटेड लिब्रेशन फ्रंट ने 1988 में तमिलों के लिए पृथक राष्ट्र तमिल ईलम की मांग की।

1983 में विद्रोही तमिलों के विरूद्ध एक आतंकित करने वाली गतिविधि अपनाई गई। 1983-86 के दौरान लगभग दो लाख तमिल बेघर हो गये। इतिहास में सबसे बदतर जातीय दंगों ने हजारों तमिलों को भारत में शरणार्थी बना दिया।

भारत ने इस संकट के समाधान में अपनी सहायता प्रस्तुत की परंतु इसे तमिलों की ओर से भारत का श्रीलंका में भारतीय हस्तक्षेप माना गया। जब स्थिति बहुत ही असामान्य हो गयी तो 1987 में दोनों देशों ने एक समझौता किया। इसके अनुसार भारत ने सैन्य सहायता देने की पेशकश की। इंडियन पीस कीपिग फोर्स को श्रीलंका में शांति बहाली में मद्द करने के लिए वहां भेजा गया। आई.पी.के.एफ. को यहां भेजकर भारत ने स्पष्ट कर दिया कि श्रीलंका और बाह्य ताकतों के सामने यदि इस क्षेत्र में कोई भारत-विरोधी गतिविधि की गई तो नई दिल्ली चुप नहीं बैठेगी।

यद्यपि 1987 की संधि भारतीय कूटनीति की विजय थी परंतु यह भारत के लिए बहुत महंगा साबित हुआ। भारत के लगभग 12,000 सैनिक मारे गए और इसका इस संघर्ष में शामिल होने से इसे प्रतिदिन दो करोड़ रुपए व्यय करने पड़े। इसका बदतर हिस्सा यह था कि तमिल आईपीकेएफ के विरोधी हो गये और दोनों के बीच युद्ध छिड़ गया। 1987 की भारत-श्रीलंका संधि के निर्माणकर्ता राजीव गांधी की एलटीटीई (लिब्रेशन टाइगर्स ऑफ तमिल ईलम) के नेता वीलूपिल्ले प्रभाकरन की ओर से 1991 में हत्या करवा दी गयी।

28.3.3 पारस्परिक सहयोग के क्षेत्र

1990 के बाद से ही भारतीय सेनाओं को श्रीलंका से हटाए जाने के बाद से भारत और श्रीलंका के बीच आर्थिक संबंधों को शक्तिशाली बनाने के प्रयास किये जा रहे हैं। 1998 में दोनो देशों में विभिन्न क्षेत्रों में द्विपक्षीय सहयोग को बढ़ाने के लिए भारत-श्रीलंका फाउण्डेशन की स्थापना की गई। वे व्यापार को सरल बनाने के लिए एक मुक्त व्यापार क्षेत्र बनाने पर सहमत हो गये हैं, जो ऊंचाईयों पर पहुंच गया है।

तमिलों और सिन्हालियों के बीच शांति प्रक्रिया के लिए श्रीलंका द्वारा दोनों को आमंत्रित करने को भारत ने प्रोत्साहित किया। 1998 में श्रीलंका ने जातीय समस्या का शांतिपूर्ण हल ढूंढने के लिए नॉर्वे को आमंत्रित किया। भारत श्रीलंका की एकता चाहता है। इस प्रक्रिया का सबसे अहम पहलु यह रहा कि श्रीलंका और एलटीटीई के बीच 2002 में युद्ध विराम संधि हुई और उन दोनों के बीच वार्ताओं का सिलसिला आरम्भ हुआ। नार्वे ने माना और कहा कि पुन: इस क्षेत्र में संघर्ष के अंत के लिए भारत द्वारा की गई किसी भी पहल के रास्ते में वह नहीं आयेगा।

पाठगत प्रश्न 28.3

(क) श्रीलंका कब स्वतंत्र हुआ?

(ख) श्रीलंका के तमिल भाषी दो वर्गों के नाम लिखिए।

(ग) किस द्वीप के संदर्भ में भारत ने 1974 में अपने दावे को त्याग दिया?

(घ) किस वर्ष में भारत ने आईपीकेएफ को श्रीलंका में भेजा?

आपने क्या सीखा

- भारत और चीन के बीच संघर्ष के कारण तिब्बत और सीमा विवाद रहे हैं। भारत और चीन के बीच 1954 में हुए एक समझौते के अनुसार तिब्बत के ऊपर चीन की प्रभुसत्ता को भारत स्वीकार करता है। परंतु 1962 में युद्ध के बाद सीमा विवाद हल नहीं हो पाया और जिसमें भारत ने अपना कुछ क्षेत्र चीन को खो दिया, वह अब भी वैसा ही है। वर्षो की दूरी के बाद भारत और चीन अब आर्थिक

संबंधों और सीमा विवाद पर वार्ता के द्वारा संबंधों का सामान्यीकरण कर रहे हैं।

- भारत और पाकिस्तान के बीच विवाद का मुख्य कारण कश्मीर है जिसके कारण दोनों देश अब तक 1947, 1965, 1971 और 1999 में आमने-सामने युद्ध कर चुके हैं। सीमा पार आतंकवाद भी प्रमुख मामला है। भारत ने दोनों देशों के बीच संबंधों में अच्छे परिवर्तन लाने का प्रयास किया। शिमला समझौते के द्वारा लाहौर घोषणा आदि से सांस्कृतिक और शिक्षण संबंधी आदान प्रदान को बढ़ावा मिला। पाकिस्तान के साथ एक सारगर्भित अग्रसर हो रही वार्ता भी विकास की ओर है।
- भारत और श्रीलंका के बीच संबंधों को सामान्यतया मैत्री संबंध माना जाएगा। सिवाय तमिल जातीय समस्या के जिसने दोनों देशों के बीच संबंधों पर एक काली छाप छोड़ी है। श्रीलंका में भारत द्वारा आईपीकेएफ इंडियन पीस कीपिंग फोर्स को भेजना भारत के लिए एक कड़वा अनुभव रहा। 1990 में वहां से उन्हें हटाने के बाद भारत ने श्रीलंका में चल रहे जातीय संघर्ष से अपने आपकों अलग रखने का फैसला किया और नॉर्वे जैसे अन्य देशों को इस समस्या का शांतिपूर्ण प्रक्रिया द्वारा हल ढूंढने का अवसर दिया। परंतु भारत और श्रीलंका के बीच आर्थिक सहयोग का विस्तृत एवं व्यापक होना उनके बीच परस्पर विश्वास का प्रतीक है।

पाठांत प्रश्न

1. भारत और चीन के बीच 1962 में हुए युद्ध के कारणों का वर्णन कीजिए।
2. 1990 के बाद से भारत और चीन के बीच संबंधों के सामान्यीकरण का उल्लेख कीजिए।
3. भारत और पाकिस्तान के बीच विवाद का कारण कश्मीर है। क्या आप इससे सहमत हैं?
4. श्रीलंका में पृथक्करण के कारणों की व्याख्या कीजिए। इस संदर्भ में भारत द्वारा इस समस्या को सुलझाने में किए गए प्रयासों का भी वर्णन कीजिए।

पाठ पर आधारित प्रश्नों के उत्तर

28.1

(क) 1949

(ख) 1955

(घ) मकमेहोन रेखा

(ङ) 1970 का उत्तरार्द्ध

(च) जियांग झेमिन

28.2

(क) असत्य

(ख) असत्य

(ग) सत्य

(घ) सत्य

(ङ) असत्य

(च) असत्य

28.3

(क) 4 फरवरी 1998

(ख) भारतीय तमिल और सीलोन के तमिल

(ग) कच्छातिवु द्वीप

(घ) 1987

सत्रीय अभ्यास के लिए संकेत

1. खण्ड 28.1.1 देखें
2. खण्ड 28.2.2 देखें
3. खण्ड 28.2.1 देखें
4. खण्ड 28.3.2 देखें

किशोरों के मुद्दों पर आइए विचार करें

डब्लू एच ओ स्वास्थ्य को पारिभाषित करता है, ''एक ऐसी शारीरिक, मानसिक और सामाजिक स्थिति, न कि केवल बीमारी या दुर्बलता का न होना।''

SENIOR SECONDARY COURSE
POLITICAL SCIENCE
STUDENT'S ASSIGNMENT – 2

Maximum Marks: 50 | **Time : 1½ Hours**

INSTRUCTIONS

- Answer All the questions on a seperate sheet of paper
- Give the following information on your answer sheet:
  - Name
  - Enrolment Number
  - Subject
  - Assignment Number
  - Address
- Get your assignment checked by the subject teacher at your Study Centre so that you get positive feedback about your performance.

Do not send your assignment to NIOS

1.	When was the United Nations established ?	2
2.	What is the main purpose of the U.N. Charter ?	2
3.	What is meant by Non-alignment ?	2
4.	What function is performed by ILO. ?	2
5.	Where and when was the 1st summit of NAM held ?	2
6.	What is meant by Cold War ?	2
7.	What is meant by Panchsheel ?	2
8.	What is meant by NIEO ?	2
9.	What is meant by Disarmament ?	2
10.	List any four guiding principles of Panchsheel.	4
11.	Describe any four functions of the Security Council.	4
12.	What functions are performed by WHO.	4
13.	What is Universal Declaration of Human Rights. Mention any three Human Rights.	1+3
14.	List any four functions of UNESCO.	4
15.	Identity any two problems of Indo-US relations during the Cold War period.	2+2
16.	Highlight any two areas of co-operation between India and Russia.	2+2
17.	Describe the boundary dispute between India and China.	4
18.	Briefly explain the Kashmir issue between India and Pakistan.	4

19. Describe any four steps talen by India to strengthen the United Nations. 4

20. Explain the factors that determine India's foreign policy ? 8

21. Explain the role of United Nations in maintaining world peace ? 8

22. Discuss India's relations with the USA. 8

23. Explain Indo-Pak relations since 1990. 8

24. Write a detailed note on the relavance of Non-alignment. 8